नवरात्रि -चैतन्य देवियों की यादगार

ब्र.कु.जगदीश....

पुण्य भूमि भारतवर्ष परमपिता परमात्मा की अवतरण भूमि है। इसी अविनाशी भूमि पर कल्याणकारी परमात्मा ने मानवमात्र को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने का दिव्य अलौकिक कर्त्तव्य किया था। उन्हीं ईश्वरीय कर्त्तव्यों की पुनीत स्मृति में भारतीय त्योहार मनाये जाते हैं। लेकिन अज्ञानता के इस युग में हम उनके ईश्वरीय संदेश को भूल गये और रस्म-रिवाज के रूप में त्योहारों को मनाने लगे हैं। फलस्वरूप हमारा आध्यात्मिक पतन होता जा रहा है। अपनी आध्यात्मिक पृष्ठभूमि से पृथक होकर पाश्चात्य देशों का अंधानुकरण कर हम घोर भौतिकता की ओर तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे समय में यह अत्यावश्यक है कि त्योहारों के आध्यात्मिक संदेश को हम पूर्ण रूपेण हृदयंगम करें। वस्तुत: ये त्योहार माया की मादक नींद में बेसुध नर-नारी को झकझोर कर जगाने के लिए ही आते हैं।

अश्विन शुक्ल प्रतिपक्ष से लेकर नवमी तक नवरात्रि का त्योहार भक्ति-भावना और उत्साह से मनाने के बाद दशमी को भारत के लोग विजय पर्व अथवा दशहरा मनाते हैं। इस त्योहार के प्रारंभ में ही लोग 'कलश' की स्थापना करते हैं और अखण्ड दीप जगाते हैं जो लगातार नव दिन तक जलता रहता है। वे इन दिनों कन्या-पूजन करते, नियम पालन करते, जागरण तथा व्रत-उपवास करते तथा दुर्गा, काली, सरस्वती आदि देवियों का पूजन करते हैं।

विजयदशमी - असुरत्व पर देवत्व के विजय का प्रतीक महान त्योहार है। इसके साथ अनेक प्रतीकात्मक पौराणिक कथायें जुटी हुई हैं। कहते हैं कि जब असुरों के अनाचार और अत्याचार से धरा प्रकम्पित हो उठी थी, देवत्व का लोप हो गया था और मानवता कराह रही थी, तब शक्ति रूपिणी दुर्गा ने उनका विनाश किया और देवत्व की पुनर्स्थापना की। इसी दिन देव विजयी रावण पर राम ने विजय प्राप्त की जिससे देवभूमि भारत पर पावन सतोप्रधान राम राज्य की स्थापना हुई।

नवरात्रि से सम्बन्धित पौराणिक कथाएं - ''दुर्गा सप्तशती'' नामक ग्रंथ में और 'मार्कण्डेय पुराण' में यह वर्णन आता है कि ''कल्प के अंत में शेष नाग पर सोये भगवान विष्णु के कानों के मैल से दो भयंकर असुर उत्पन्न हुए जो 'मधु' और 'कैटभ' कहलाए। उन असुरों ने देवी-देवताओं को अपना बंदी बना लिया और विष्णु की नाभि-कमल में विराजमान ब्रह्मा को खा जाने के लिए तैयार हो गया। तब ब्रह्माजी ने उनके डर के मारे विष्णु जी को जगाने के लिए 'योग-निंद्रा' देवी की स्तुति की। देवी योग निंद्रा, जो ही वास्तव में 'लक्ष्मी देवी' है, विष्णु जी के मुख, नासिका आदि से निकली। विष्णु जी उठे और उन्होंने पांच हजार वर्षों तक उन असुरों से बाहु-युद्ध किया। वह असुर विष्णु जी की वीरता से संतुष्ट होकर बोले - 'हमसे वर मांगो।' विष्णु जी ने कहा, यह वर दो कि तुम दोनों मेरे हाथों से मारे जाओ। तब विष्णु जी ने उन दोनों को सुदर्शन चक्र से मार डाला।

दूसरे आख्यान में यह वर्णन आता है कि 'महिषासुर' नामक असुर ने जब स्वर्ग के सभी देवी-देवताओं को पराजित कर दिया था, तब त्रिदेव की शक्ति से एक कन्या के रूप में जो 'आदि शक्ति' प्रगट हुई, वह दिव्य अस्त्रों-शस्त्रों से सुसज्जित थी, त्रिनेत्री थी और अष्ट भुजाओं वाली थी। उसने महिषासुर का वध किया और देवी-देवताओं को मुक्त कराया। इसमें आगे यह भी वर्णन आता है कि रणभूमि में देवी के जितने श्वास निकले, वे सभी तत्काल ही सैंकड़ों हजारों गणों (योद्धाओं) के रूप में प्रकट हो गये और अस्त्रों-शस्त्रों से भी असुरों से लड़ने लगे। आखिर महिषासुर एक भैंस का रूप धारण करके आगे बढ़ा। उसके श्वास के प्रचण्ड वायु के वेग से उड़े हुए सैंकड़ों पर्वत-खण्ड आकाश से गिरने लगे। लड़ते-लड़ते भैंसे का रूप छोड़कर उसने सिंह का रूप, फिर हाथी का रूप और अंत में फिर से भैंसे का रूप धारण किया। लड़ाई करते हुए वह भैंसे से आधा बाहर निकला ही था कि देवी ने उसे मार डाला। दुर्गा का प्राय: यही चित्र, जिसमें कि महिषासुर भैंसे से निकल रहा होता है और दुर्गा उसे वध कर रही होती है, दिखाया जाता है।

तीसरे आख्यान में यह वर्णन आता है कि सूर्य के वंश में शुभ और निशुंभ नामक दो असुर पैदा हुए। उनके प्रधान कार्यकर्त्ता का नाम रक्तबिन्दु था, सेनापति का नाम धूम्रलोचन था और उसके दो मुख्य सहायकों का नाम चण्ड और मुण्ड था। शिव जी की शक्ति से 'आदि कुमारी' प्रगट हुई और उसके विकराल रूप से काली प्रगट हुई। उसने चण्ड-मूण्ड का विनाश किया और फिर कालिका ने अपनी योगिनी शक्ति द्वारा धूम्रलोचन और रक्तबिन्दु का भी विनाश किया। आख्यान में यह बताया गया है कि रक्त बिन्दु की यह विशेषता थी कि यदि उसके रक्त का एक भी बिन्दु गिर जाता तो उस बीज से एक और असुर पैदा हो जाता था। आदिशक्ति ने रक्त बिन्दु का इस तरह विनाश किया कि उसका एक भी बिन्दु रक्त अथवा बीज नहीं रहा।

शब्दार्थ या भावार्थ - अब देखा जाए तो वास्तव में तो इन आख्यानों में रूपक अलंकार के द्वारा विश्व के एक बहुत ही महत्वपूर्ण वृत्तांत का वर्णन किया गया है। परंतु लोग प्राय: इसका शब्दार्थ ही ले लेते हैं जिससे वे सत्य-बोध से वंचित रह जाते हैं। वास्तव में किसी एक या किन्हीं दो असुरों द्वारा सभी देवी-देवताओं के परास्त होने की बात शब्दार्थ में तो किसी के गले के नीचे उतरना भी मुश्किल है। हाँ, भावार्थ में यह वृत्तांत बहुत महत्वपूर्ण है। वास्तव में 'मधु' और 'कैटभ' 'मीठे' और 'विकराल' अर्थ के वाचक होने से 'राग' और 'द्वेष' के प्रतीक हैं और 'असुर' शब्द 'आसुरी लक्षणों' या 'मनोविकारों' का बोधक है। काम, मोह और लोभ - 'मधु' नामक 'असुर' हैं और 'क्रोध तथा अहंकार' - 'कैटभ' हैं। इसी प्रकार 'महिष' शब्द का अर्थ है 'भैंस'। भैंस - मंदबुद्धि, अविवेक तथा तमोगुण का प्रतीक है। धूम्रलोचन का अर्थ है धुएं वाली आँखें। अत: यह ईर्ष्या और बुरी दृष्टि का वाचक है। शुंभ और निशुंभ, हिंसा और द्वेष आदि के वाचक हैं।

शक्तियों की जीवन कहानी - शक्तियों के 108 नाम प्रसिद्ध हैं। वे सभी लाक्षणिक अथवा गुणवाचक नाम हैं। उन नामों से या तो उनकेपवित्र जीवन का और उनकी उच्च धारणाओं का परिचय मिलता है या जिस काल में वे हुई, उस समय का ज्ञान होता है या परमपिता परमात्मा के साथ तथा मनुष्यमात्र के साथ उनके सम्बन्ध का बोध होता है और या तो उनके कर्त्तव्यों का पता चलता है। उदाहरणार्थ - शक्तियों के जो सरस्वती, ज्ञान, विमला, तपस्विनी, सर्वशास्त्रमयी, त्रिनेत्री इत्यादि नाम हैं, उनसे यह परिचय मिलता है कि शक्तियों में ज्ञान शक्ति, योग, तपस्या की शक्ति और पवित्रता की शक्ति थी। और ये कौमार्य व्रत (ब्रह्मचर्य) का पालन करती थी और उनमें पवित्रता की धारणा थी। उनके 'आद्या', 'आदिदेवी' इत्यादि जो नाम हैं, उनसे हमें यह ज्ञान होता है कि वे सृष्टि के आदि काल में अर्थात् सतयुगी सृष्टि की स्थापना के कार्य के समय हुई थी। इसी प्रकार, उनके 'ब्राह्मी', 'कुमारी', सरस्वती, भवानी (शिव पुत्री), भव-प्रिया अर्थात् शिव को प्रिय, शिवमयी शक्तियां, इत्यादि नामों से यह बोध होता है कि वे सरस्वती इत्यादि प्रजापिता ब्रह्मा की ज्ञान-पुत्रियां थी और उन्हें परमात्मा शिव ने ब्रह्मा द्वारा ज्ञान शक्ति, योग शक्ति तथा पवित्रता की शक्ति दी थी। उनके दैहिक जन्म से सम्बन्धित नाम और माता-पिता तो भिन्न थे परंतु जब उन्होंने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा परमात्मा शिव से ज्ञान प्राप्त किया और परमपिता परमात्मा से आत्मिक सम्बन्ध जोड़ा तब उनके सरस्वती, शारदा, ज्ञाना, ब्राह्मी, कुमारी इत्यादि अलौकिक नाम प्रसिद्ध हुए। तब उन्होंने मनुष्यों को भी वह ईश्वरीय ज्ञान दिया। और उस द्वारा उनके आसुरी लक्षणों का अंत किया और उनकी आत्माओं को शांत और शीतल किया। इस कारण उनके शीतला, दुर्गा तथा असुर-संहारक शक्तियां इत्यादि जो प्रसिद्ध नाम हैं वे कर्त्तव्य वाचक हैं।

शक्तियों का गायन-वंदन रात्रि को क्यों? - रात्रि में ही शक्तियों के गायन-वंदन अथवा जागरण की जो परम्परा है उसके पीछे भी एक महत्वपूर्ण इतिहास छिपा हुआ है। वास्तव में 'रात्रि' शब्द उस रात्रि का वाचक नहीं है जो चौबीस घंटे में एक बार आती है। बल्कि यह उस 'रात्रि' का बोधक है जो 'शिवरात्रि' के नाम से भी प्रसिद्ध है। सतयुग और त्रेतायुग को 'ब्रह्मा का दिन' कहा जाता है क्योंकि उस काल में जन-

शेष पृष्ठ संख्या 10 पर

जयपुर, कमला अपार्टमेंट। शास्त्रवादी पं.विजयशंकर मेहता से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.स्वाति बहन।

हरदोई। जेल अधीक्षक डॉ.एस.आर.सिंह को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.रोशनी बहन।

जलपाईगुड़ी। सोनाली उच्च माध्यामिक बालिका विद्यालय में मेमोरी मैनेजमेंट पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.प्रो.स्वामीनाथन।

जालोर। जिलाधिकारी विशाल राजन को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.रंजु बहन साथ में हैं ब्र.कु.उमा बहन, ब्र.कु.मिनती बहन।

गुरुसहायगंज। जिलाधिकारी सेल्वा कुमारी को 'ईश्वरीय संदेश' देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.नीलम बहन।

हिसार। समाज कल्याण अधिकारी दलबीर सिंह सैनी को 'ईश्वरीय संदेश' देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.रमेश कुमारी।